492 वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 42
प्रथम अंक
अगस्त 2019

इस अंक में...

13 समग्र आस्था के साथ लक्ष्य के प्रति अडिग रहें
14 राष्ट्रीय घटनाक्रम
19 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
27 वैश्विक जनसंख्या परिदृश्य पर संयुक्त राष्ट्र रिपोर्ट : 2027 में भारत सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश होगा
29 आर्थिक-वाणिज्यिक परिदृश्य
36 आर्थिक-समीक्षा 2018-19
43 केन्द्रीय बजट 2019-20
48 भूगोल : एक दृष्टि में
52 बजट : सांविधानिक प्रावधान
54 नवीनतम सामान्य ज्ञान
58 खेलकूद
60 रोजगार समाचार
62 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
65 युवा प्रतिभाएं
76 स्मरणीय तथ्य

फोकस

78 (1) एक राष्ट्र एक चुनाव
80 (2) जलशक्ति अभियान : संचय जल, बेहतर कल
82 (3) भारत में ऑर्गेनिक फार्मिंग का भविष्य
84 भारत के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व
86 वर्तमान में चर्चित विभिन्न अवधारणाएं
89 विश्व परिदृश्य

लेख

93 लोक सभा : लोकप्रिय प्रथम सदन
98 धरोहर लेख—मोहन-जोदड़ो के अवशेष और उनका रासायनिक विश्लेषण
100 सामयिक लेख—बौद्धिक सम्पदा : भारत का नया युग
103 सामयिक लेख—बरकरार रहे प्रेस की स्वतन्त्रता
104 पर्यावरण लेख—जलवायु परिवर्तन : अब तक का सफर
106 संगीत विरासत लेख—भारतीय संगीत परम्परा का उद्भव एवं विकास
109 अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध लेख—भारत-दक्षिण अफ्रीका के बीच बढ़ती सामरिक भागीदारी
111 राजनीतिक लेख—भारत के पड़ोसी देशों से सम्बन्ध : वर्तमान परिप्रेक्ष्य
114 संवैधानिक लेख—भारतीय प्रेस आयोग
117 जैव-विविधता लेख—व्यापक जैविक विलोपन
118 कृषि लेख—संकट में भारतीय कृषि एवं कृषक
120 विज्ञान लेख—अन्तरिक्षीय कचरा तैयार हुआ खतरा : कोई समाधान नहीं
122 सार संग्रह
126 सामान्य अध्ययन—(i) सिविल सेवा (प्रा.) परीक्षा, 2019
137 (ii) हरियाणा लोक सेवा आयोग नायब तहसीलदार परीक्षा, 2019
144 (iii) छत्तीसगढ़ पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा, 2018
150 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
152 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
155 सामान्य जानकारी—मुगलकालीन राजनीतिक एवं आर्थिक व्यवस्था
158 तर्कशक्ति—आई.बी.पी.एस.—आर.आर.बी.ऑफीसर (स्केल–1) प्रारम्भिक परीक्षा, 2018
162 संख्यात्मक अभियोग्यता—(i) इण्डियन बैंक पी.ओ. परीक्षा, 2018
166 (ii) आई. बी. पी. एस.— आर. आर. बी. ऑफीसर (स्केल– 1) प्रारम्भिक परीक्षा, 2018
171 क्या आप जानते हैं ?
172 अपना ज्ञान बढ़ाइए
173 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—कर्म सफलता का मूल है
175 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक—481 का परिणाम
176 सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक—192
179 वार्षिकी

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

समग्र आस्था के साथ लक्ष्य के प्रति अडिग रहें

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

Desire is the key to motivation, but it's determination and commitment to an unrelenting pursuit of your goal–a commitment to excellene–that will enable you to attain the success you seek.

– Mario Andretti

जब कोई व्यक्ति किसी भी तरह की साधना करता है, तो उसकी साधना तभी सफल हो सकती है, जब उसके भीतर तीन गुण हों–पहला गुण है आस्था. आस्था शब्द सुनते ही हमारे मन में विचार कोंदेगा. आस्था किसके प्रति, ईश्वर के प्रति, किस्मत के प्रति, कर्मों के लेख के प्रति, आस्था किस पर, किसी देवी-देवता पर, किसी गुरु पर, आत्मज्ञानी विराट गुरुजी से जब पूछा गया, आस्था किस पर तो उन्होंने आस्था शब्द का अर्थ करते हुए कहा कि आस्था आत्मा में अवस्थिति को कहते हैं. आपका ध्यान समग्र रूप से अपने आप में हो. आपकी चेतना किसी और की तरफ प्रवाहित न होती हो, आप समग्र रूप से जीना शुरू करो और अपने भीतर के आत्मस्वरूप पर विश्वास रखते हुए, अपनी योग्यताओं पर भरोसा रखते हुए, अपने आपको जगाते हुए और खुद को जानते हुए जीओ. ये आस्था है. यानी आस्था है आत्म अवस्थिति. आस्था का अर्थ किसी अन्य पर आस्था करना नहीं है, क्योंकि जब तक कोई भी साधक किसी भी अन्य में अपनी चेतना को केन्द्रित करता है तब तक वह अपने आत्मरूप को कभी भी प्रकट नहीं कर पाएगा. उसका ध्यान तभी सफल होगा, उसकी साधना तभी सफल होगी, जबकि वह आत्मरूप होगी, यानी आस्था अपने से दूसरों की तरफ नहीं हो, अपने आप में से प्रकट होने वाली हो इसीलिए साधक को अपनी साधना में सफल होने के लिए सबसे पहले आस्था गुणों की आवश्यकता होती है. यह आस्था तभी साधना में आगे बढ़ाती है. जब एक व्यक्ति अपने लक्ष्य के प्रति अडिग होता है.

दूसरा गुण होता है–अडिगता का, अडिगता अर्थात् अपने लक्ष्य से अविचलित होना, अडिग होना. जैसे अंगद का पैर कहा जाता है. अंगद ने जिधर पैर रख दिया, उसके पैर को कोई हिला नहीं सकता, ठीक ऐसे ही हमारा ध्यान अपने लक्ष्य से जरा भी विचलित न होने पाए. ऐसा न हो कि आज हमने कुछ लक्ष्य निर्धारित किया, कल फिर उसके मार्ग में कोई विकटता आ गयी अथवा कोई प्रलोभन आ गया और हम अपने लक्ष्य को भूल गए और अक्सर विकटता आती है, तो आदमी अपने लक्ष्य को बदल देता है. सोचता है कि ये सब होना है कि जो आज बहुत मुश्किल है. संसाधन उपलब्ध नहीं हो सकते इसीलिए मैं अपने लक्ष्य को छोड़ देता हूँ. अगर कठिनाइयों को देख करके लक्ष्य को छोड़ दिया तो व्यक्ति कभी भी सफल नहीं हो सकेगा. साधक को अपनी साधना में सफल होने के लिए अपने लक्ष्यों के प्रति अडिग होना होगा. आज तक जितने भी लोग सफल हुए हैं. वे वही लोग हैं, जो अपने लक्ष्य को तय करने के बाद न कभी उससे भ्रमित हुए, न कभी उससे च्युत हुए. कोई भी प्रलोभन उन्हें डिगा नहीं पाया. लोगों ने लालच दिया होगा, अपना काम-धाम छोड़ दो, हमारे साथ आ जाओ, हम तुम्हें सारी सुविधाएँ देंगे, घर पर रहने का खर्चा, बिजली-पानी का खर्चा, तुम्हारे खाने का खर्चा, तुम अपना लक्ष्य छोड़ दो. प्रलोभन पाकर कितने ही लोग पलायन कर जाते हैं और जो लोग प्रलोभन पाकर पलायन कर जाते हैं वे अपने लक्ष्य तक कभी भी नहीं पहुँच पाते हैं. अगर आपने कोई लक्ष्य निर्धारित किया है, तो समग्र आस्था के साथ अपने लक्ष्य के प्रति अडिग रहें, अविचलित रहें ये अडिगता अन्त तक तभी बनी रह सकती है जब साधक में तीसरा आवश्यक गुण हो.